पंडित वि. ना. भातखंडे - प्रारंभिक संगीत संस्कार और संगीत शिक्षा ग्रहण (संक्षेपमे)

1. पंडित जी का जन्म 10 अगस्त 1860 में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पवित्र अवसर पर मुंबई के वालुकेश्वर में हुआ। उनके **पिता नाना साहब** को संगीत में रुचि थी और वे स्वरमंडल बजाते थे। पंडित जी को संगीत में अभिरुचि दिलाने वाली उनकी **माताजी** थी। वे अपने मधुर आवाज में लोरियां, भजन स्तोत्र आदि गीत गाती थी। 10 - 12 वर्ष की आयु में पंडितजी को बांसुरी बजाने का शौक था और वे बांसुरी अच्छी बजाते थे ।
2. पंडितजी मैट्रिक होने के बाद कॉलेज में दाखिल हुए । इस समय में उन्हें सितार बजाने का शौक लगा । उन्हीं के मोहल्ले में गोपाल गिरी नामक गोसाई सितार बजाया करते थे । वह **वल्लभ दास दामुलजी** नाम के धर्म गुरु से सितार सीखते थे । पंडितजी ने उनसे परिचय कर लिया और माता-पिता से छिपकर वल्लभ दासजी से सितार सीखना शुरू किया। वल्लभदासजी ने पंडितजी का परिचय उनके गुरु , वैष्णव मठके महंत - अधिपति, **जीवनजी महाराज** से करा दिया, जो एक कलाकुशल बीनकार थे। जीवनजीमहाराज के पास संगीत शास्त्रके पुराने ग्रन्थ थे। पण्डितजी को उन ग्रंथोका अध्ययन करनेका मौका मिला, तथा संगीतमे संशोधन करने की प्रेरणा उन्हें जीवनजी महाराजसे मिली। दो एक बरस में ही उन्होंने सितार बजाने में अच्छी प्रगति की । मगर एक दिन उनके पिताजी ने उनका सितार वादन महफिल में सुना। वे प्रसन्न हुए और यह बात अब उन्होंने अपने पत्नी से कही । पत्नी की सलाह पर नाना साहब ने पंडित जी को कहा की सितार सीखनेके पीछे लगकर कॉलेज की पढ़ाई न बिगड़ पाये। यह ताकीद ध्यान में रखकर पंडित जी ने सितार का शिक्षण छोड़कर अपना कॉलेजका अभ्यास जारी रखा ।
3. सन 1885 में LLB करने के बादमें एक बरस पंडितजी ने कराची हाई कोर्ट में बड़ी सफलता से वकालत की। एक बरस बाद वह बंबई लौट आये। उस समय पारसी गायन उत्तेजक मंडल नाम की एक संगीत संस्था मुंबई में थी जिसके वे सभासद बन गये। उस संस्था में वे **रावजीबुवा बेलबागकर, उस्ताद अली हुसैन और उनके चाचा विलायत हुसैन खाँ** इनसे गाना सीखने लगे। इन गुरुओं से उन्होंने करीब करीब दो-तीनसौ ध्रुपद और कई ख्याल सीख लिए। इसी के साथ वे प्राचीन संगीत का भी अध्ययन करते थे। गायन उत्तेजक मंडल में तब मुरादाबाद के प्रसिद्ध उस्ताद नझीर खाँ संगीत अध्यापन करते थे। नझीर खाँ बाद में भिंडी बाजार घराने के प्रसिद्ध गायक माने जाने लगे। वे पंडिता अंजनीबाई मालपेकरजी के गुरु थे। उनके साथ पंडित जी बहुत चर्चा करते थे। उस्ताद नझीर खाँ का देहांत होनेके बाद बड़े बालकृष्णबुवा के शिष्य **गणपतीबुवा भिलवडीकर** गायन उत्तेजक मंडल में संगीत अध्यापन करते थे। उनसे भी पण्डितजीने कई पारम्परिक रचनाएँ सीखी। इन सब गुरुओं से उन्हें गायन वादन प्रयोग को एवं नियमों की जानकारी प्राप्त हुई किंतु इन राग स्वरूपों के नियम बतानेवाला कोई ग्रंथ उनको प्राप्त नहीं हुआ।

4. प्रचलित संगीत का एवं प्राचीन ग्रंथोंका अभ्यास वे करते थे, और गायन उत्तेजक मंडली के सभासदों के साथ चर्चा करते थे। संगीत का क्रियात्मक एवं शास्त्रीय अभ्यास करने के पश्चात भी उनका समाधान नहीं हुआ। इसी दौरान पंडितजी की, उस्ताद नझीर खाँ के एक शिष्य, वाडीलाल शिवराम से मुलाकात हुई। वाडीलालजी ने पंडितजी से प्राचीन संस्कृत ग्रंथोंका अध्ययन करने की इच्छा प्रकट की। वाडीलालजी और प्रख्यात नत्थन खाँ के सुपुत्र मोहम्मद खाँ की मदद से उनका परिचय कोठी वाले **जयपुरवाले मोहम्मद अली खाँ के पुत्र आशिक अली खाँ** से हुआ। उस समय आशिक अली खाँ कुछ आर्थिक संकट में थे । उनको पर्याप्त वेतन देकर पंडितजी ने घरानेदार बंदिशे सीखना शुरू किया। इन बंदिशों को स्वरलिपि में लिखकर फिर उन्हें गाकर उस्तादजी को दिखाते थे । यह क्रम कई महीने तक चला। यह वार्ता उस्ताद आशिक अली खाँ के पिता मोहम्मद अली खाँ के पास किसी ने पहुंचाई और बताया कि पंडित भातखंडे ने आशिक अली खाँ को लूट लिया है। यह सुनते ही मोहम्मद अली खाँ को बहुत गुस्सा आया और वे तुरंत बंबई पहुंचे। आशीष अली खाँ को बहुत भला बुरा सुनाया और पंडित जी से मिले। पंडित जी ने अपना कार्य, प्रचलित रागदारी संगीत को इन्हीं घरानेदार चीजों के आधार पर शास्त्र सम्मत नियमबद्ध करने की आवश्यकता तत्संबंधी अपने विचार उन्हें अवगत कराये। पंडितजी ने आशिक अली खाँ से सीखी हुई बंदिशें सुनायी तब मोहम्मद अली खाँ को प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा की इन बन्दिशोंको आपने मेरे बेटे से सही-सही सीखी है और वैसे ही हूबहू गायी भी है। इससे मोहम्मद अली खाँ को बड़ी तसल्ली हुई और कई दिन बंबई में रहकर अपनी ओरसे पंडित जी को और कई बंदिशे सिखायी। साथ ही साथ पंडितजी ने **ग्वालियर घराने के मशहूर गायक एकनाथजी पंडित** से ग्वालियर घराने की पारम्परिक रचनाएँ सीखी।
5. इसी कार्यकाल में पंडित जी ने प्रथम पश्चिम हिंदुस्तान, बाद में दक्षिण भारत, फिर पूर्व भारत और उत्तर भारत की यात्राएँ की। इन यात्राओं में बहुत विद्वानों से चर्चा विमर्श किया, प्रायोगिक संगीत संबंधी बहुत जानकारी इकट्ठा की तथा प्राचीन संगीतके ग्रन्थ इकट्ठे किये। संगीतके अभ्यास के साथ- 1910 साल तक वे वकालत करते रहे। मगर उनकी पत्नी और इकलौती बेटी का स्वर्गवास होने के कारण वह कौटुंबिक उलझन से विमुक्त हो गए। 1910 तक वकालत के द्वारा जीवन भर अपना उदर- निर्वाह, बिना किसी के आगे शर्मिंदा हुए बिना, चल सके इतना द्रव्य संचय होने के पश्चात उन्होंने वकालत का व्यवसाय सदा के लिए छोड़ दिया और तन मन धन से संगीत की सेवा में जुट गए।
6. इसके बाद उन्होंने पांच ऑल इंडिया म्यूजिक कॉन्फरन्सेस का आयोजन किया। इन कॉन्फरन्सेसमें अनेक उस्तादों और विद्वानोंसे चर्चा करके कई प्रचलित और अप्रचलित रागोंके स्वरूप और बर्ताव कायम किये गये।

7. 1917 - 1918 के पूर्व पंडितजी **रामपुर के नवाब हामिद अली खाँ** के शागिर्द हुए , जिसके परिणामस्वरूप उनका तानसेन परंपरामे विधिवत प्रवेश हो सका और नवाब हामिद अली खाँ तथा **उनके उस्ताद तानसेन की पुत्री के वंशज वजीर खाँ** से तानसेन घरानेके ध्रुपद और होरी सीख सके। इसी कार्यकालमे पंडितजीका परिचय **तानसेन पुत्रवंश परंपराके उस्ताद मुहम्मद अली खाँ गिद्धौरवाले** से हुआ। उनसे भी पण्डितजीने तानसेन पुत्रवंश परंपरा की घरानेदार बंदिशें प्राप्त हुई और सीख ली। फ़लस्वरूप तानसेन परंपरा के अनेक ध्रुपद, बंदिशें, होरी आदी गीत प्रकारोंका समावेश वे क्रमिक पुस्तक मालिका के भागों में कर सके।
पंडित भातखंडेजी के कार्यों का विवरण अगले कुछ अध्यायों में दिया गया है।

सन्दर्भ : 1) भातखण्डे स्मृति ग्रन्थ,
2) Bhatkhande's Contribution to Music- author Sobhana Nayar

तानसेन—पुत्रवंश की परम्परा में पण्डित भातखण्डे

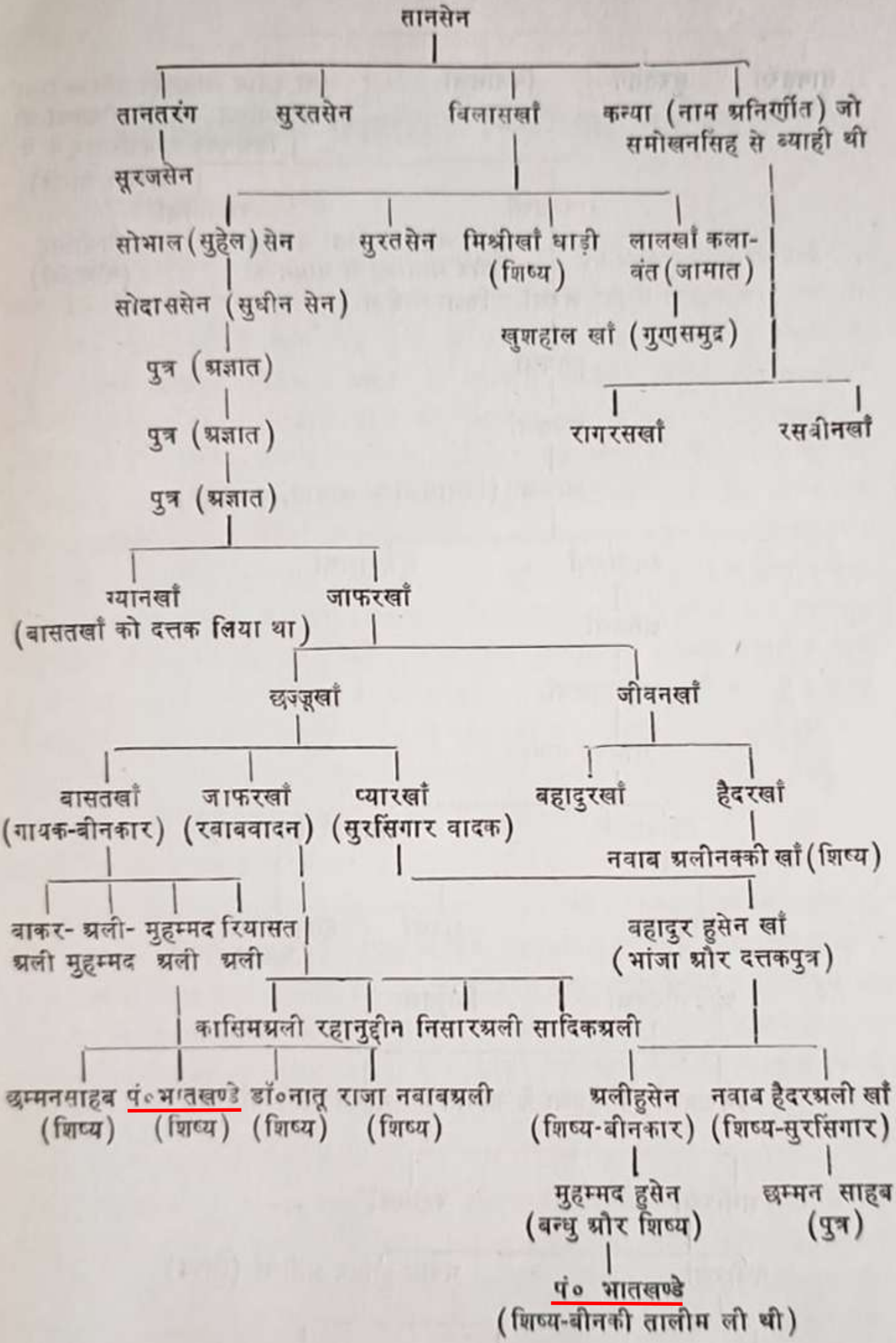

—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग ४ से संकलित

तानसेन—पुत्रिवंश की परम्परा में पण्डित भातखण्डे

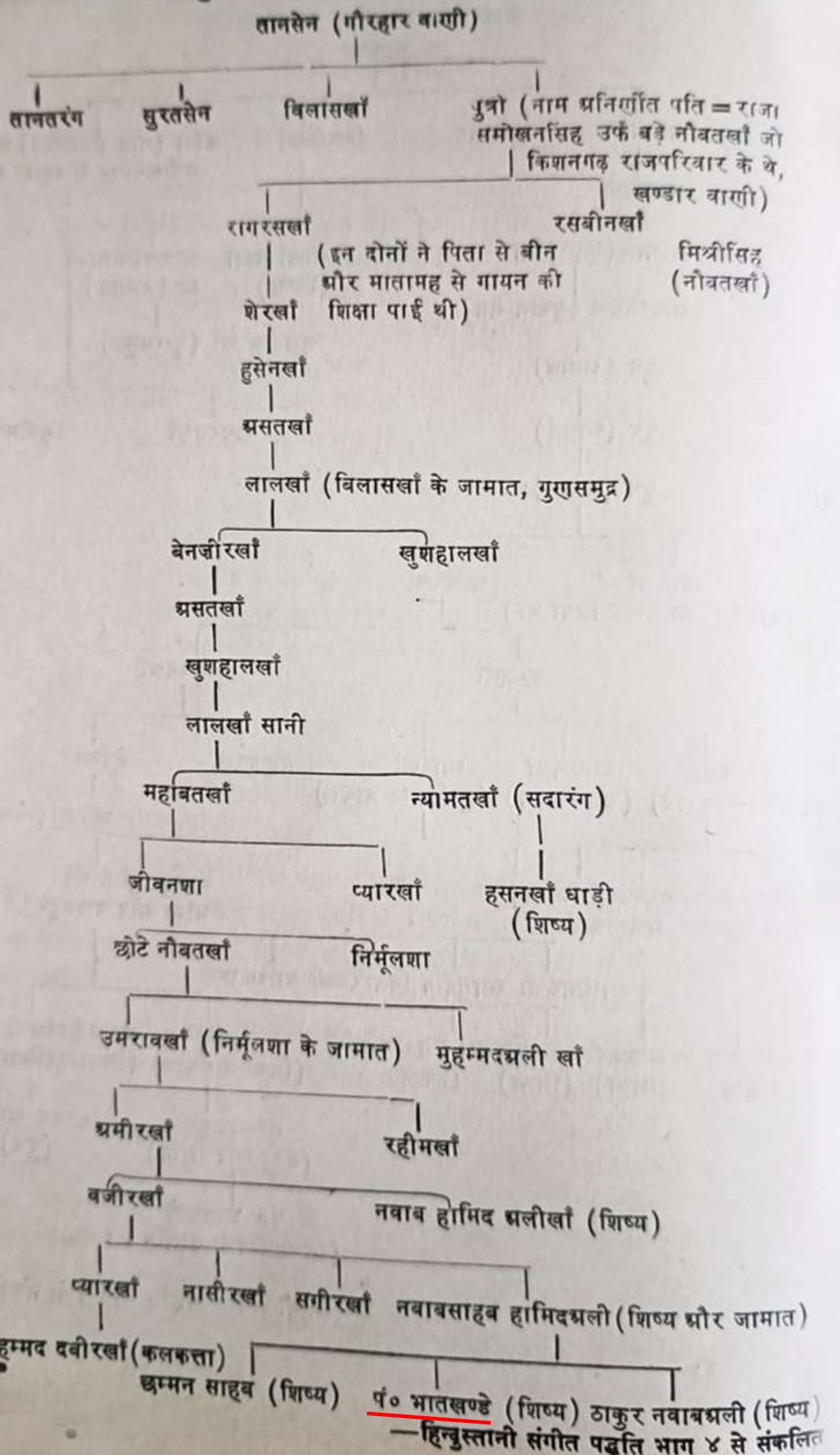

—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग ४ से संकलित

Pandit V N Bhatkhande-GuruShishya Parampara

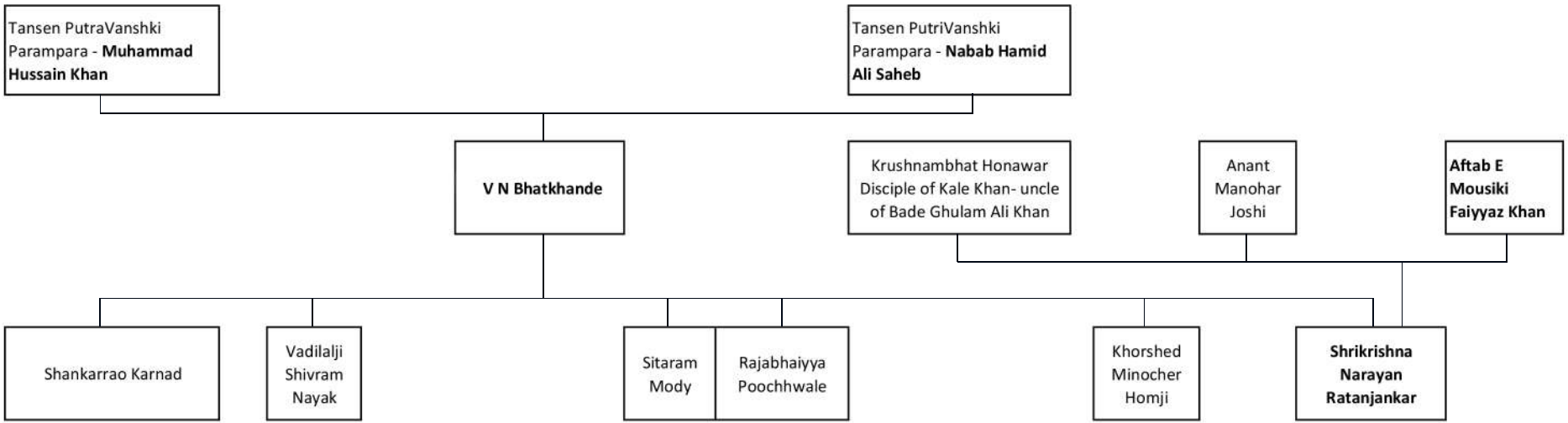

Ref: Bhatkhande Smrii Grantha

Book in Marathi "संगीताचार्य पं . विष्णू नारायण भातखंडे" by Dr. S. N. Ratanjankar

13-04-2025

Acharya S N Ratanjankar_GuruShishya Parampara

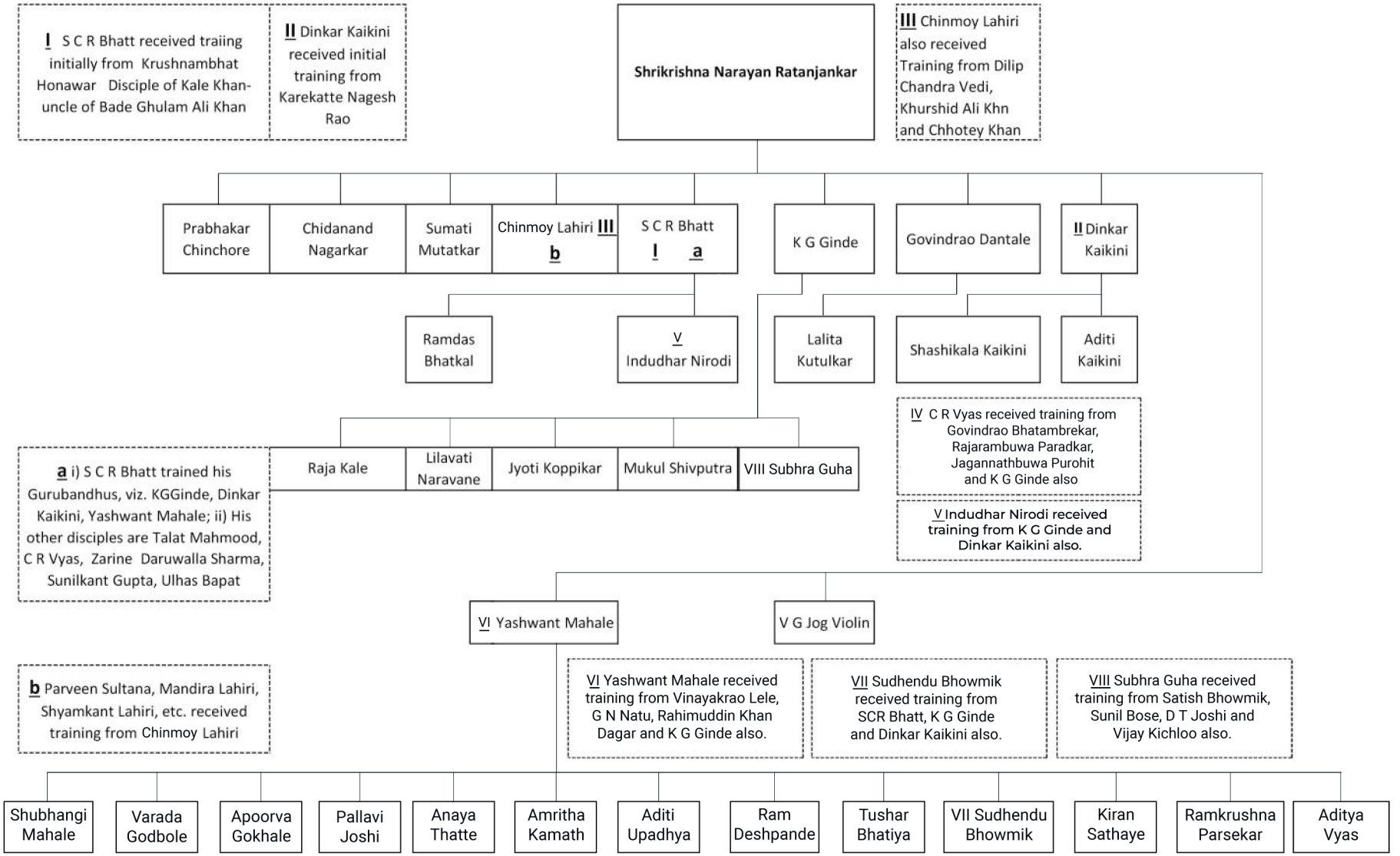

Reference: **1) Information received from Pandit Yashwant Mahale;**
2) Information available in the Public Domain.

Note: **Many senior Artists of other Gharanas received guidance from Pandits S C R Bhatt, K G Ginde, etc.**

13-04-2025